कतारें मक्के की

लेखनः कैमिल यारब्रो, चित्रः कैरल बायार्ड

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



ममा और ग्रेट-ग्रैनमा (पर-दादीमाँ) कोमल उंगलियों से नमूने बुनतीं हैं और उनकी थपकियाँ-सी देती आवाज़ें तब कहानियाँ बुनतीं हैं, जब वे अपने बच्चों के बालों को मक्के की कतारों की अफ़्रीकी शैली वाली चोटियों में गूंथती हैं।

चोटियों की हरेक शैली का अपना खास नाम है और कालों की सम्पन्न परम्परा के अतीत या वर्तमान में उनका सशक्त अर्थ भी है। जब वे बालों को संवारने का काम करती हैं, बहन और उसका छोटा भाई मैंभी (मीटू) बाल गुंथवाने के ज़रिए उस सम्पदा के बारे में जानते हैं, जिसे वे भी साझा कर सकते हैं।

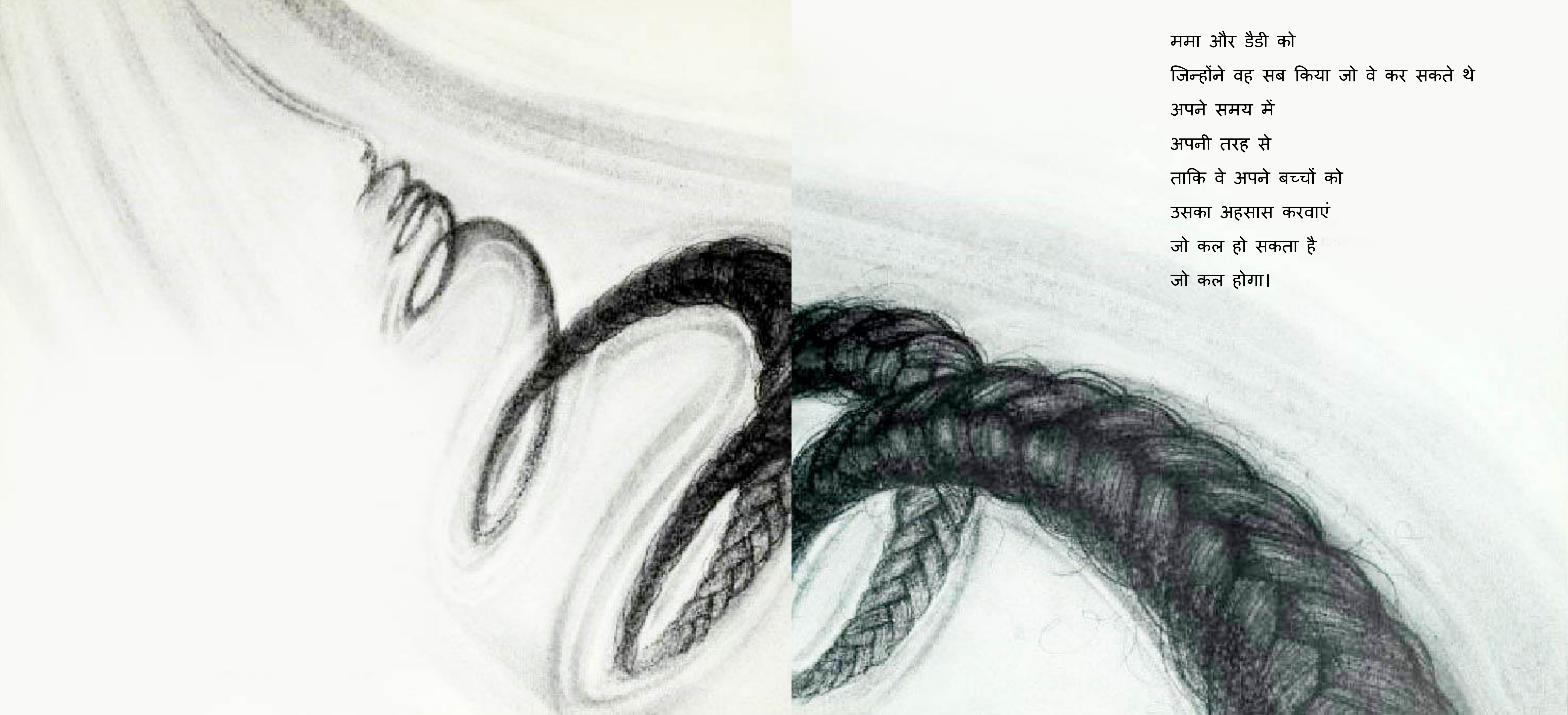
कैमिल यारब्रो की उद्वेलित करने वाली काव्यात्मक कथा अफ़्रीका की इस विशिष्ट शैली के बारे में बताती है और कैरल बायार्ड के चित्र इस शानदार फैशन को जीवन्त करते हैं।

कतारें मक्के की

लेखन: कैमिल यारब्रो

चित्र: कैरल बायार्ड

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



ममा और डैडी को
जिन्होंने वह सब किया जो वे कर सकते थे
अपने समय में
अपनी तरह से
ताकि वे अपने बच्चों को
उसका अहसास करवाएं
जो कल हो सकता है
जो कल होगा।



नमस्ते, मेरा नाम सिस्टर (बहन) है। मेरा दूसरा नाम शर्ली एन है, पर सब मुझे सिस्टर ही बुलाते हैं। यह मेरा छोटा भाई माइक है। सब इसे ब्रदर (भाई) बुलाते हैं। ममा कहती हैं कि दक्षिण में, जहाँ वे पैदा हुईं बच्चों को बुलाने का यही तरीका था। पर पता है क्या? मैं अपने भाई को मीटू यानी मैंभी बुलाती हूँ। इसलिए क्योंकि मैं जो कुछ करती हूँ उसे भी ज़रूर करना होता है।

जैसे जब मैंने ममा से पूछा कि क्या मैं अंधेरा होने तक बाहर खेल सकती हूँ? मैंभी को कहना ही पड़ा कि क्या मैं भी जा सकता हूँ? वह एकदम छोटे बच्चे जैसा है। पर हम साथ में मज़ा भी करते हैं।

अब हम अन्दर जा रहे हैं, ममा और पर-दादीमाँ की ढ़ेरों कहानियों में से एक सुनने। हर शाम किस्सागोई का समय होता है। और उउउउ, उउउउ, उउउउ! वे दोनों क्या शानदार, बारूदी कहानियाँ सुनाती हैं।





गए कल जब हम अन्दर गए पर-दादीमाँ ममा के बालों को कॉर्नरोस् (मक्की की कतारें) में गूंथ रही थीं। उन चोटियों को पर-दादीमाँ यही कहती हैं। उन्होंने बताया कि चोटियों को गूथने की इस शैली को उनके बड़े-बूढ़े यही कहते थे, क्योंकि वे खतों में मक्की बोया करते थे। और मक्की के खेतों की कतारें इन चोटियों की कतारों जैसी दिखती थीं। ममा के बाल बड़े सुन्दर लग रहे थे।

सो मैंने कहा, ''मेरे भी बालों की चोटियाँ बना दो ना, पर-दादीमाँ।'' और मैंभी ने तुरंत ही दोहराया, ''मेरे बालों की भी चोटियाँ बना दो ना पर-दादीमाँ।''

तब मैंने कहा, ''ममा तुम्हारे बाल जिस शैली में गूंथे गए हैं उसको क्या कहते हैं?'' ज़ाहिर ही है मैंभी फौरन बोला ''ममा तुम्हारे बालों की शैली को क्या कहते हैं?''

ख़ैर! ममा और पर-दादीमाँ हंसने लगे। दोनों खुश थे। हर दिन जब ममा काम से लौटती हैं, वे दोनों आपस में गपशप करती हैं और उस वक़्त की बातें याद कर हंसती हैं, जब वे आलाबामा में रहते थे।

कभी तो हमें बाहर खेलने जाने के लिए पूछना तक नहीं पड़ता, क्योंकि पर-दादीमाँ खुद से ही कह देती हैं, ''अब तुम बच्चे बाहर जाकर खेलो।''

बहरहाल ममा के बालों की चोटियाँ बन गई, वे उठीं और आइने के सामने घूम-घूम कर खुद को देखने लगीं, मानो वे नाचने जा रही हों। या डैडी की लाई पोशाक पहन कर इतरा रही हों। तब वे नीचे झुकीं, मुझे चूमा ओर बोलीं:

मुझे खुशी होती है बताने में, मेरी बच्ची

जब तुम पूछती हो, मैं होती हूँ खुश -

बालों को गुंथने की इस शैली को कहते हैं यूरु

योरुबा में इसका मतलब होता है टोकरी।

मैंभी ने कहा “टोकरी?’’

दादीमाँ ने कहा ‘‘हाँ, टोकरी।’’

तब बुद्धू मैंभी हंसते-हंसते फर्श पर ही गिर गया। पर-दादीमाँ ने जैसे ही कहा, ‘‘भाई!’’ वह फौरन उठा, क्योंकि वह जानता था कि पर-दादीमाँ उसे घुड़की लगाएंगी।

मैंने ममा से पूछा, ‘‘तुम उस टोकरी में क्या रखोगी ममा?’’

ममा ने कहा, ‘‘मैं सोचती हूँ प्यार।’’



तब मुड़े घुटनों वाले मैंभी ने पर-दादीमाँ से पूछा, ''आप अपनी टोकरी में क्या रखेंगी पर-दादीमाँ?''

पर-दादीमाँ ने कहा, ''मैं सोचती हूँ, मैं भी प्यार रखूंगी।''

तब मैंभी ने पूछा, ''अगर मैं गिर जाऊँ तो क्या प्यार भी गिर जाएगा पर-दादीमाँ।''

''अरे नहीं मेरे प्यारे!'' उन्होंने कहा। ''क्योंकि वह प्यार, टोकरी की ही तरह तुम्हारा एक हिस्सा बन जाएगा।''

सो मैंने पर-दादीमाँ से पूछा, ''आप उस टोकरी में किस तरह का प्यार रखेंगी?''

''दूसरों से पाया हुआ प्यार, मेरी नन्ही,'' वे बोलीं।

तो मैंभी को भी पूछना पड़ा, ''और मेरी टोकरी में किस तरह का प्यार रखोगी पर-दादीमाँ?''

''दूसरों से पाया हुआ प्यार मेरे गुलगुले,'' वे बोलीं

तब पर-दादीमाँ ने मैंभी को गोद में उठा चिपटाया और गनगुनाने लगीं। वैसे ही, जैसे वे गिरजे में गुनगुनाती हैं। वे बोलीं, ''अगर तुम गिरोगे तो भी दूसरों से पाया हुआ प्यार कहीं नहीं जाएगा, क्योंकि वह तुम्हारा हिस्सा बन चुका होगा। ठीक उस टोकरी की तरह, जिसे मैं गूंथ कर तुम्हारी चोटियों से बनाऊँगी।''



तब ममा ने मुझे चौकी लाकर बैठने को कहा, ताकि वे मेरे बाल संवार दें। ममा और पर-दादीमाँ कोई भी कहानी सुनाने के पहले गुनगुनाती हैं। वे कहती हैं कि इससे वे सही भाव तक पहुँच पाती हैं।

जब मैंने ममा को जल्दी से कुछ गाते सुना, मैं उनके सामने फुर्ती से चौकी पर बैठी, और कहा, ''ममा मुझे मक्की की कतारों में गुंथे बालों की कहानी सुनाओ।''

मैंभी ने तुरंत ही पर-दादीमाँ की ओर नज़रें उठाईं और बोला, ''पर-दादीमाँ मुझे भी मक्की की कतारों में गुंथे बालों की कहानी सुनाओ।'' ममा गाने लगीं:

उउउम, सुनाती हूँ मैं मक्की की कतारों में गुंथे बालों की कहानी ...

और पर-दादीमाँ ने कहाः

उम, उम, उम, उम!

सुनाती हूँ मैं मक्की की कतारों में गुंथे बालों की कहानी ...

तब पर-दादीमाँ ने मैंभी को उसकी छोटी कुर्सी पर बिठाया ताकि उसके सिर तक पहुँच सकें, और बोलीं:

ओ बच्चे, आ बैठ मेरे घुटनों के पास,
बताती मैं तुझे तेरे वंश-वृक्ष की कहानी।
सजाऊँगी तुझे राजकुमार की मानिंद,
तब सूझेगा एक सही नाम
तुझे और मुझे, दोनों को ही।
और गूंथूंगी तुम्हारे बाल,
और गूंथूंगी मैं तुम्हारे बाल ...



इसके बाद हम एकदम चुप हो गए।

और पर-दादीमाँ ने कहानी सुनानी शुरु कीः

तुम्हारे अन्दर एक रूह रहती है। वह बढ़ती चली जाती है। वह कभी मरती नहीं। कभी जब तुम डरते हो, वह थर्राती है। और जब कभी तुम इतने आहत होते हो कि तुम घुटने टेकने को हो जाते हो तैयार, उसकी झिलमिलाहट मन्द पड़ जाती है। पर वह कभी मरती नहीं। बहुत समय पहले, उस देश में जो अफ्रीका कहलाता है, हमारे पुराने लोग उसी रूह के मार्फत काम करते थे। ताकि जीवन को मायने दे सकें। और प्रशंसा कर सकें। और रूह के माध्यम से ही उन्होंने तमाम प्रतीक बनाए, साहस के, सम्मान के, बुद्धिमानी के, और प्यार व ताकत के। प्रतीक जो हमेशा ज़िन्दा रहते हैं। सिर्फ़ की प्रशंसा करने के लिए।"





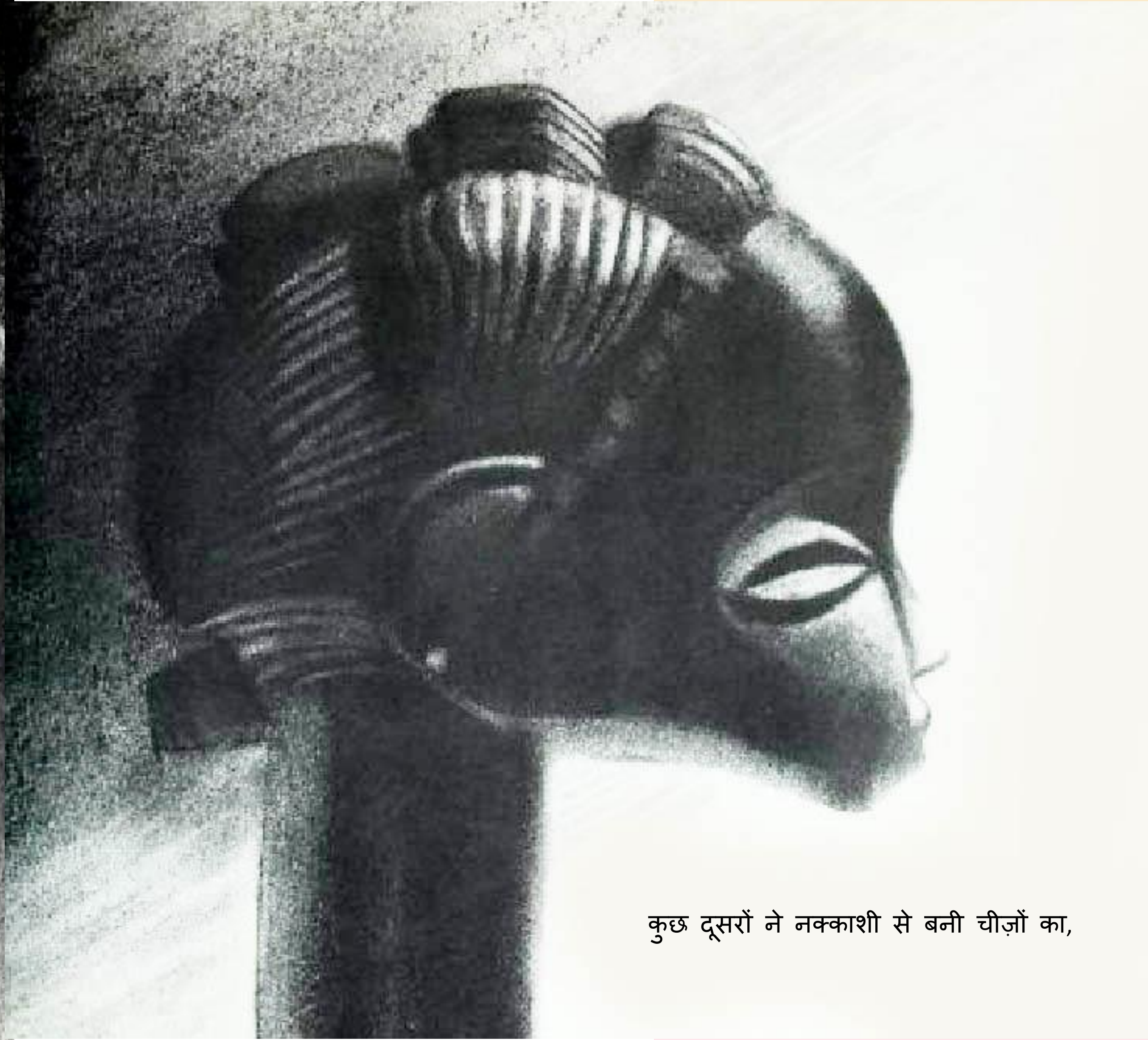




तब ममा ने कहाः

कुछ प्रतीकों ने शाही चौकियों का रूप लिया,



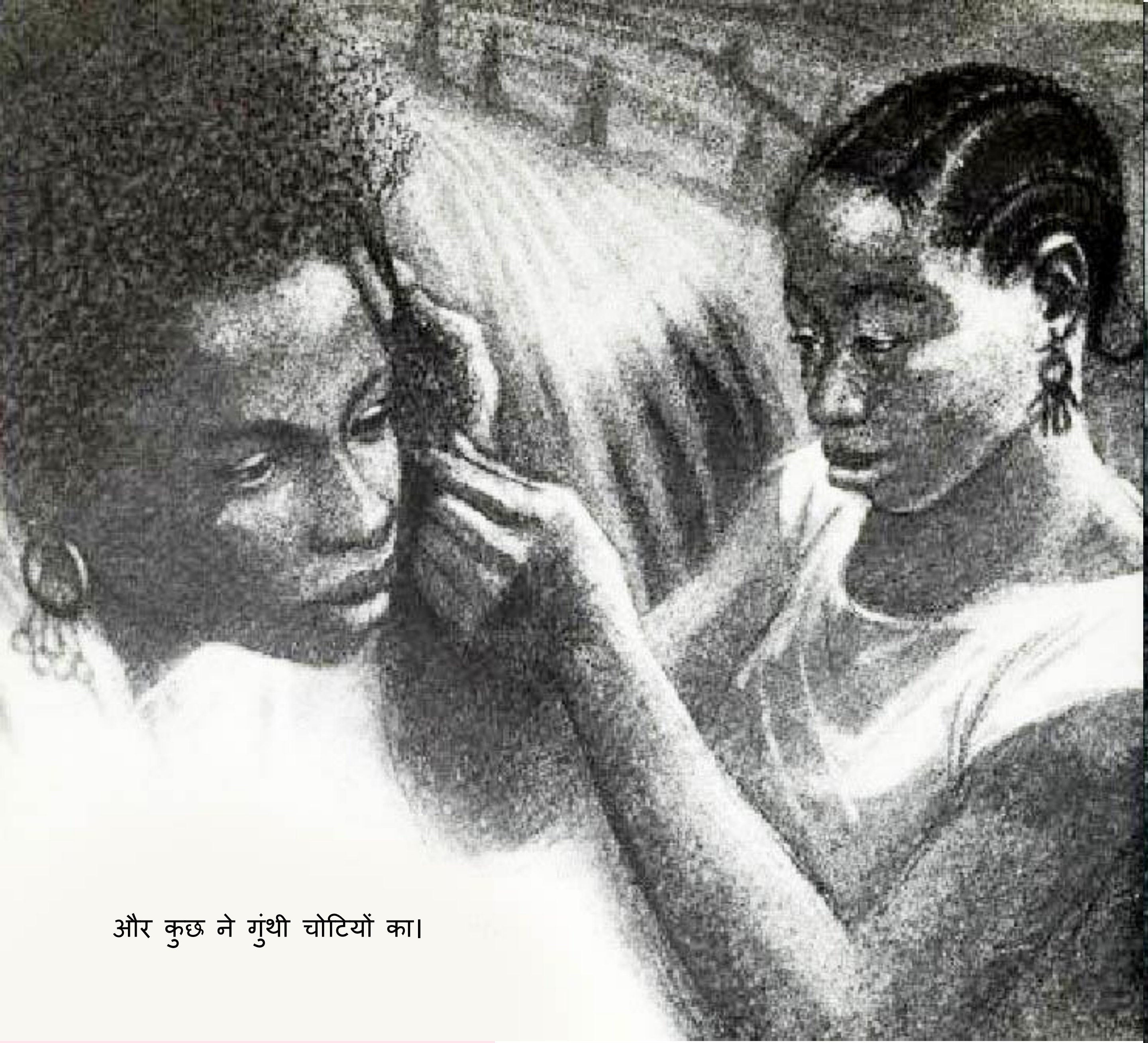


कुछ दूसरों ने नक्काशी से बनी चीज़ों का,



और कुछ ने अनुष्ठानों में किए जाने वाले मुखौटा नृत्यों का,





और कुछ ने गुंथी चोटियों का।





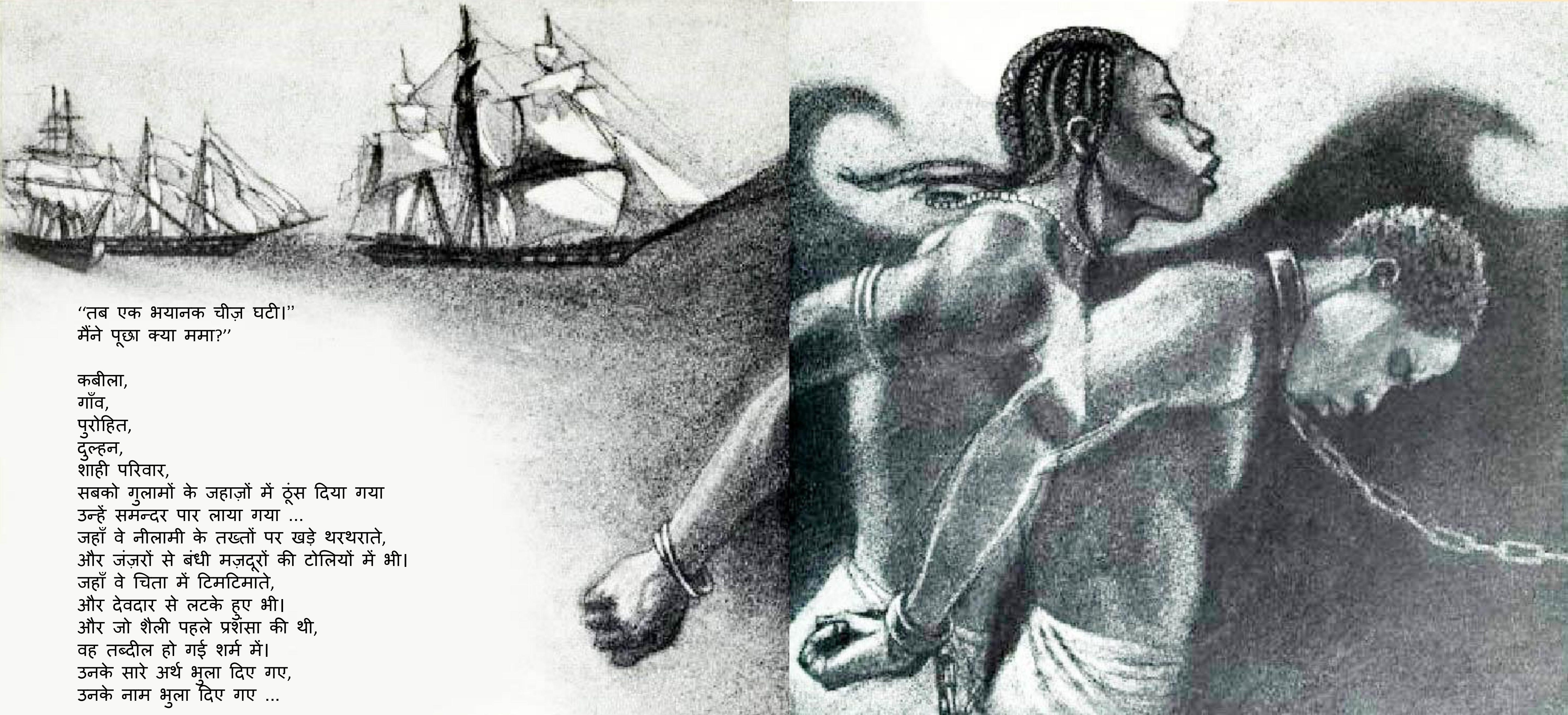
मैंभी ने ममा से पूछा, “गुंथे बाल कौन रखता था?”

“अरे कई लोग,” ममा ने कहा। “जहाँ भी देखो, लगभग जिसे भी देखो। मिस्र से स्वाज़ीलैण्ड तक के लोग। सेनेगल से सोमाली तक के लोग।”





उनके गुंथे बालों की शैली से तुम
उनके कबीले, उनके गाँव, को पहचान सकते थे ...
उस वक़्त योरूबा लोग
तीस या उससे भी ज़्यादा चोटियाँ बनाया करते थे ...
तुम राजकुमारियों, रानियों और दुल्हनों को
पहचान सकते थे
उनकी चोटियों की संख्या से ...
तुम उन देवताओं को पहचान लेते थे, जिन्हें वे पूजते थे
चोटियों को गूंथने की उनकी शैली से।



“तब एक भयानक चीज़ घटी।”
मैंने पूछा क्या ममा?”

कबीला,
गाँव,
पुरोहित,
दुल्हन,
शाही परिवार,
सबको गुलामों के जहाज़ों में ठूंस दिया गया
उन्हें समन्दर पार लाया गया ...
जहाँ वे नीलामी के तख्तों पर खड़े थरथराते,
और जंज़रों से बंधी मज़दूरों की टोलियों में भी।
जहाँ वे चिता में टिमटिमाते,
और देवदार से लटके हुए भी।
और जो शैली पहले प्रशंसा की थी,
वह तब्दील हो गई शर्म में।
उनके सारे अर्थ भुला दिए गए,
उनके नाम भुला दिए गए ...





मैंभी ने पर-दादीमाँ से पूछा, ''क्या इससे रूह मर गई?''

और पर-दादीमाँ ने कहाः

ऐसा कुछ नहीं हुआ!

अगर तुम एकदम से चुप हो जाओ,

तुम उन शाही लयों को अब भी सुन सकते हो।

तुम हवा में रूह को महसूस कर सकते हो,

आस-पास नज़र डालो तो पुराने प्रतीकों में देख सकते हो।

जिसे हम अब मक्की के कतारों वाले बाल कहते हैं,

तुम उस प्रतीक में रूह को देख सकते हो।

वह समय, शोहरत, स्थान, वर्ग से बदली नहीं है,

ना ही नफ़रत या शर्म से।

कतई नहीं ... समझो ज़रा,

रूह है जो प्रतीक बनाती है, और रूह के कई नाम हैं।

तब ममा ने कहाः

छोटी लड़की, छोटा लड़का,

चलो खेलते हैं बालों के नाम का खेल ...

हर दिन एक नई शैली,

हर दिन एक अलग नाम ...



मैंभी बोला, "पहले मैं! पहले मैं! पर मुझे नाम मिलेगा कहाँ पर-दादीमाँ?"

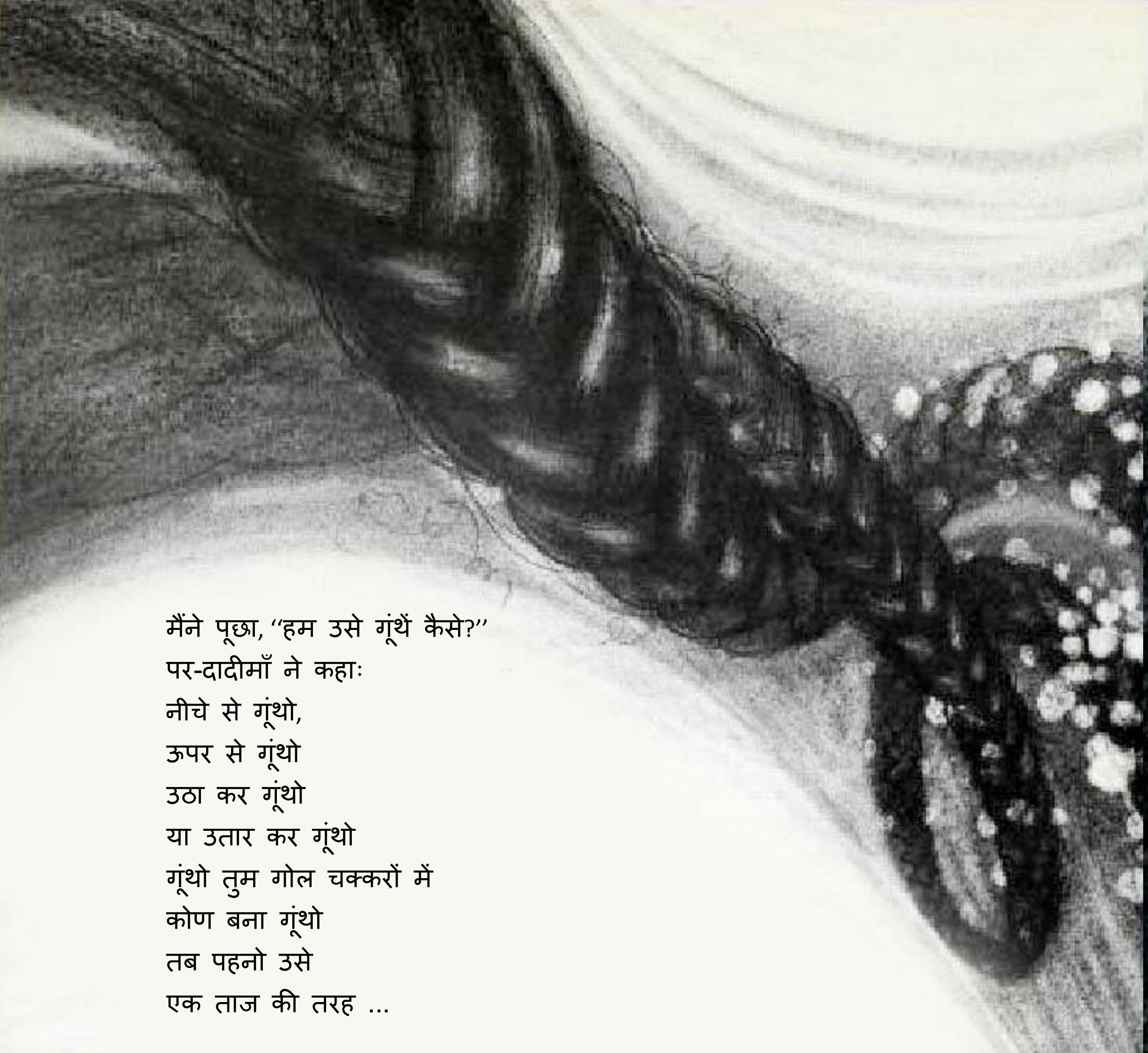
पर-दादीमाँ ने कहा, "वह बताएगी। अपनी माँ की बात सुनो।"

और ममा ने कहाः

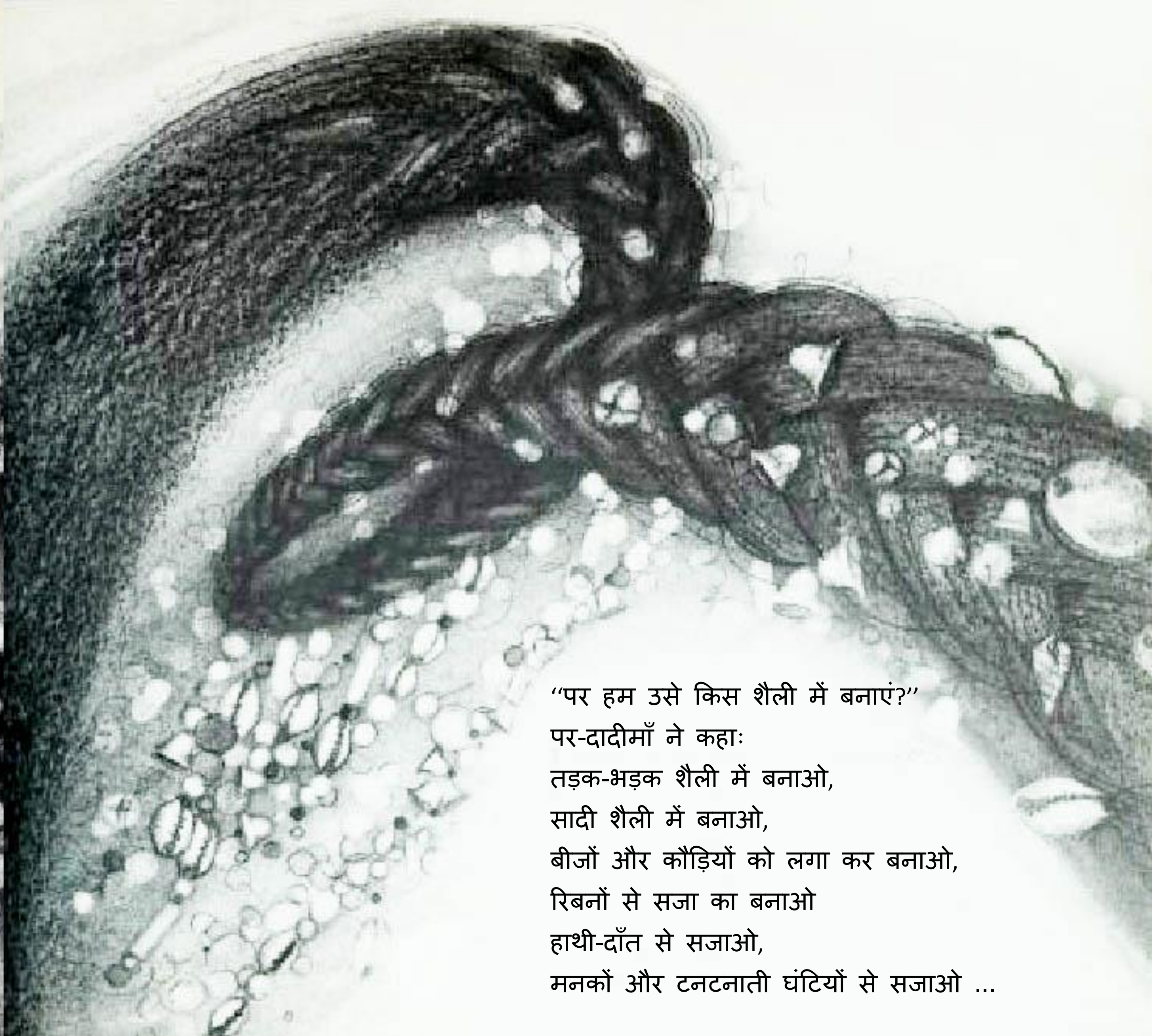
तुम उसका नाम किसी नदी पर रख सकते हो,
तुम उसका नाम किसी फल पर रख सके हो,
किसी साल या महीने पर
किसी दिन या पहर पर भी।

हम तालियाँ बजाने लगे। पर पर-दादीमाँ ने कहा,
"अपना खोपड़ा सीधे रखो लड़के।"

तुम उसका नाम किसी कविता पर रख सकते हो,
किसी शहर या स्कूल पर,
अपनी किसी शिक्षिका पर,
या किसी सुनहरे नियम पर,
तुम उसका नाम किसी हीरो पर रख सकते हो,
किसी कहावत या मछली पर
तुम उसका नाम किसी तारे पर,
किसी गीत या किसी इच्छा पर रख सकते हो ...



मैंने पूछा, “हम उसे गूंथें कैसे?”
पर-दादीमाँ ने कहाः
नीचे से गूंथो,
ऊपर से गूंथो
उठा कर गूंथो
या उतार कर गूंथो
गूंथो तुम गोल चक्करों में
कोण बना गूंथो
तब पहनो उसे
एक ताज की तरह ...



“पर हम उसे किस शैली में बनाएं?”
पर-दादीमाँ ने कहाः
तड़क-भड़क शैली में बनाओ,
सादी शैली में बनाओ,
बीजों और कौड़ियों को लगा कर बनाओ,
रिबनों से सजा का बनाओ
हाथी-दाँत से सजाओ,
मनकों और टनटनाती घंटियों से सजाओ ...

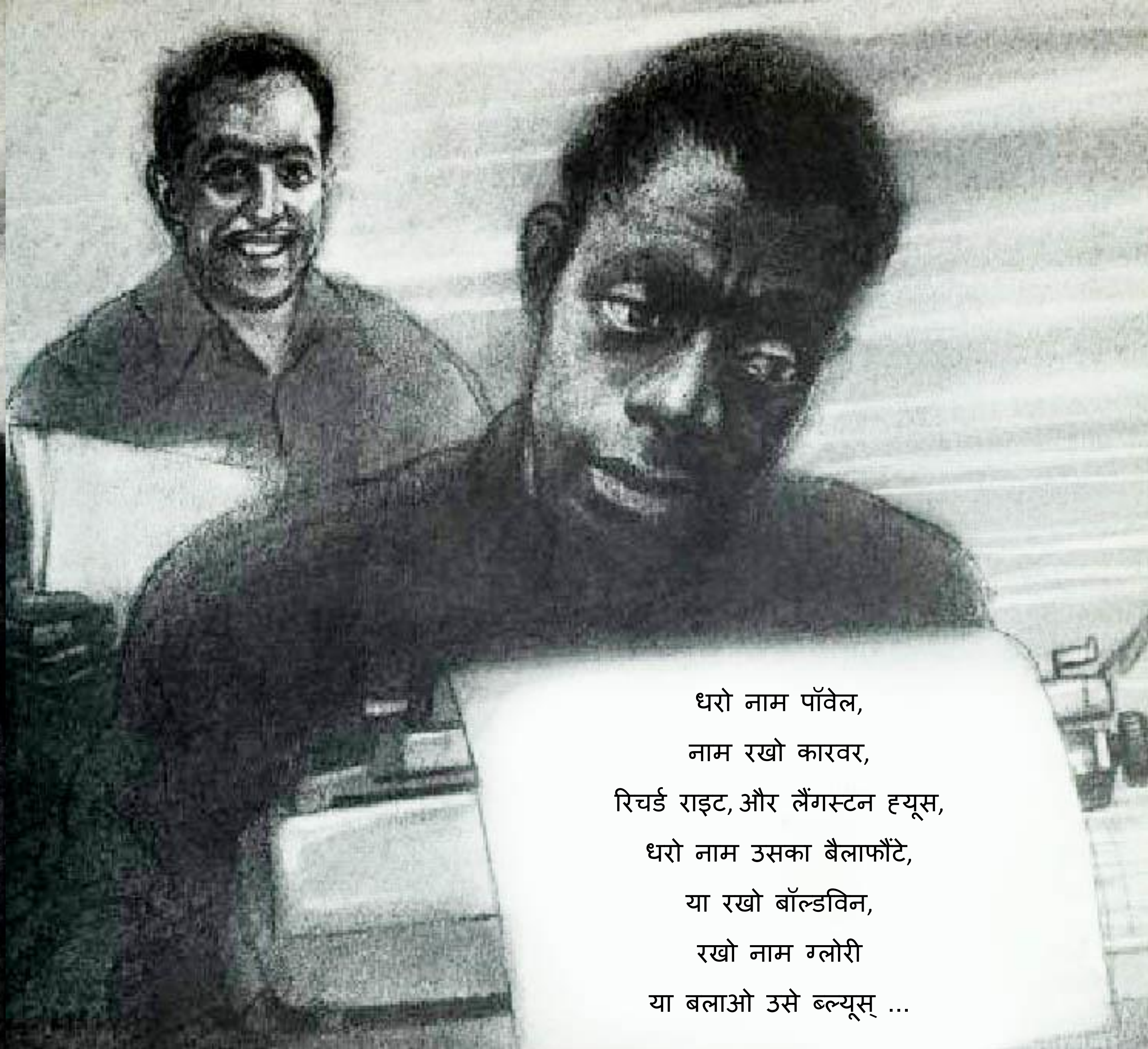




तब मैंभी ने पूछा, ''हम उसका नाम क्या रखें ममा?''
ममा ने कहाः
नाम रखो रॉबसन,
नाम धरो मैल्कम,
रख सकते हो डॉ. किंग,
या रखो डुबॉइस,
नाम धरो गार्वी, ऐसा नाम जिसे तुम गा सको।

नाम रखो टबमैन,
नाम धरो हैरिएट,
चाहो तो उस शैली को फौजी लू कहो,
नाम रखो न्ज़िंगा,
रोज़ा पार्क,
या मेहरबानी से हैटशपसूट भी ...





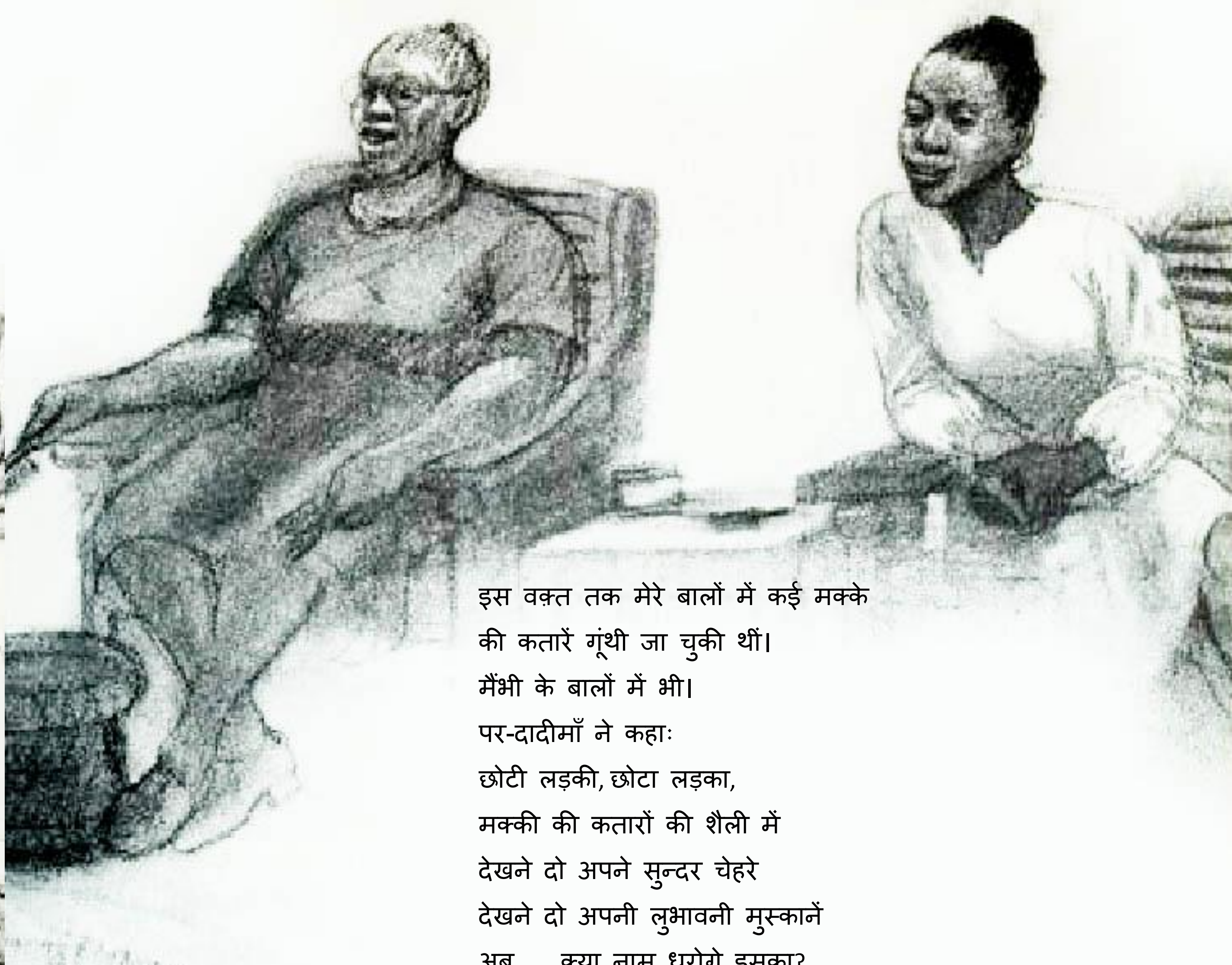
धरो नाम पॉवेल,
नाम रखो कारवर,
रिचर्ड राइट, और लैंगस्टन ह्यूस,
धरो नाम उसका बैलाफौंटे,
या रखो बॉल्डविन,
रखो नाम ग्लोरी
या बलाओ उसे ब्ल्यूस् ...





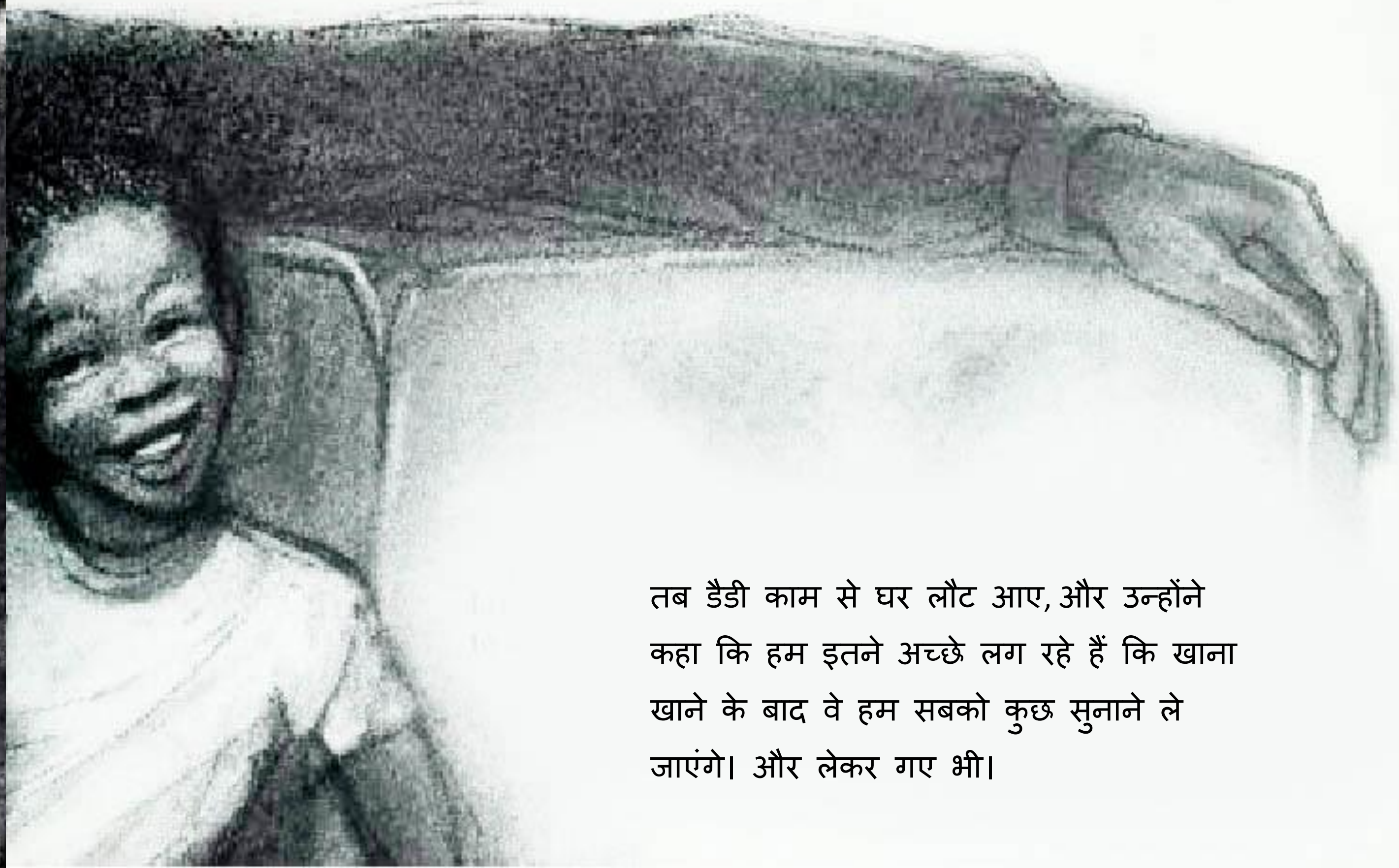
रखो नाम मिरियम
कैथरीन डनहैम,
मेरी बैथ्यून और जोसेफीन
धरो नाम अरीथा
बुलाओ उसे पुजारिन
या रानी ...





इस वक़्त तक मेरे बालों में कई मक्के
की कतारें गूंथी जा चुकी थीं।
मैंभी के बालों में भी।
पर-दादीमाँ ने कहाः
छोटी लड़की, छोटा लड़का,
मक्की की कतारों की शैली में
देखने दो अपने सुन्दर चेहरे
देखने दो अपनी लुभावनी मुस्कानें
अब ... क्या नाम धरोगे इसका?
मैंने अपनी शैली का नाम लैंगस्टन ह्यूस के नाम पर रखा,
क्योंकि मैं उनकी एक कविता सुना सकती थी। पर मैंभी ने
अपनी शैली को 'बैटमैन' कहा। वह एकदम छोटा बच्चा है!





तब डैडी काम से घर लौट आए, और उन्होंने कहा कि हम इतने अच्छे लग रहे हैं कि खाना खाने के बाद वे हम सबको कुछ सुनाने ले जाएंगे। और लेकर गए भी।

लेखिका के बारे में

केमिल यारब्रो लेखन के अलावा एक बेहतरीन अभिनेत्री, संगीतकार और गायिका भी रही है। उन्होंने टेलिविज़न और रंगमंच पर विभिन्न प्रकार की भूमिकाएं अदा की हैं। *टु बी यंग, गिफ्टेड, एण्ड ब्लैक* की न्यू यॉर्क में प्रस्तुति के अलावा वे उसकी अन्य स्थानों में प्रस्तुति करने वाली मंडली की सदस्या रही हैं। उन्होंने *द आइरन पॉट कुकर* के गीतों व संवादों की रिकॉर्डिंग की, जो बेहद प्रशंसित रही, और जिसे हाल में जैज/फोक/एथनिक परफॉर्मेन्स के लिए नैशनल एनडॉउमेंट फॉर आर्टस् फैलोशिप दी गई।

शिकागो की मूल निवासी मिज़ यारब्रो अब न्यू यॉर्क में रहती हैं।

चित्रकार के बारे में

कैरल बायार्ड का जन्म न्यू जर्सी की एटलांटा सिटी में हुआ था। उन्होंने पहले फिलैडैल्फिया के फ्लैचर आर्ट मैमोरियल में अध्ययन किया और बाद में न्यू यॉर्क सेंटर फॉर डिज़ाइन में भी। बायार्ड अपने चित्रों के लिए मशहूर हैं। उन्होंने अनेक बाल पुस्तकों के लिए चित्र बनाए हैं, जिसमें एलोइस ग्रीनफील्ड की *एलीशिया ड्रू*, तथा अटेइस रॉबिनसन की *थ्री एफ्रिकन टेल्स* शामिल हैं। उनके चित्र कई एकल व सामूहिक प्रदर्शनियों में दर्शाए जा चुके हैं। वे न्यू यॉर्क क्षेत्र में कला शिक्षा कार्यक्रम में भी सक्रिय हैं।